अमृत काल श्रृंखला -1

सत्याग्रही संन्यासी

गांधीजी के आत्मीय सहयोगी भवानी दयाल सन्यासी की संक्षिप्त जीवनी

हरिवंश

आजादी अमृतवर्ष शृंखला-1

सत्याग्रही संन्यासी

(यशस्वी कर्मयोगी, अनूठे देशभक्त, हिंदी के अद्वितीय सेवक-साधक. गांधीजी के आत्मीय सहयोगी भवानी दयाल संन्यासी की संक्षिप्त जीवनी)

हरिवंश

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: सितंबर, 2023

© हरिवंश

अपनी बात

देश आजादी के अमृत काल में है. अगले 24 सालों का दौर (2047 तक) अमृत काल का होगा. तब देश आजादी का शताब्दी वर्ष मनाएगा. अमृत काल में पांच संकल्पों को साकार कर, भारत को दुनिया का सिरमौर बनाने का आवाहन और संकल्प है. इसे 'पंच प्राण' का नाम दिया गया है. 'पंच प्राण' के पांच बिंदु हैं- विकसित भारत, गुलामी की हर सोच से मुक्ति, विरासत पर गर्व, एकता-एकजुटता और नागरिकों के कर्तव्य.

यह संयोग ही है कि पिछले करीब आठ सालों से एक-एक कर ऐसे अवसर आ रहे हैं, जब देश अपने नायकों का स्मरण कर रहा है. उनके संघर्ष, चरित्र और बलिदान की विरासत और परंपरा पर गर्व कर रहा है. इतिहास के पन्नों में जगह न पा सकनेवाले या विस्मृत नायकों के महान योगदान भी सामने आ रहे हैं. अतीत में जिनके अनूठे, अद्वितीय और शानदार भूमिका ने देश की आजादी की लड़ाई को गति और शक्ति दी, वे आजाद इतिहास के फुटनोट में भी जगह नहीं पा सके. उत्तर से दक्षिण तक, पूरब से पश्चिम तक, ऐसे असंख्य और अनेक महापुरूष हुए हैं.

अब देश के कोने-कोने से ऐसे अमर नायकों की साधना, तप, त्याग और मूक बलिदान के प्रेरक तथ्य लिखे, कहे और बताये जा रहे हैं. इतिहास में यह प्रयास अमृत काल-पंच प्राण के दो महत्वपूर्ण बिंदुओं, गुलामी की हर सोच से मुक्ति और विरासत पर गर्व के लक्ष्य प्राप्ति की ओर ले जाता है.

इसी कड़ी में यह पुस्तिका इतिहास में दफन एक महान नायक की संक्षिप्त परिचयात्मक जीवनी है. इस नायक का व्यक्तित्व, कृतित्व, नेतृत्व भारत, भारतीय और भारतीयता के लिए अनूठा था. विस्मृत, चकित और प्रेरित करनेवाला. संघर्ष का अद्भुत मनोबल. तप, साधना और संकल्प का जीवन.

वह नायक थे, भवानी दयाल. मशहूर हुए स्वामी भवानी दयाल संन्यासी के नाम से. एक समय में प्रवासी भारतीयों और गिरमिटिया मजदूरों के बीच, भारत के साथ दुनिया के कई देशों में अत्यंत लोकप्रिय नाम. उनका पैतृक मूल है, बिहार के रोहतास जिला के करगहर प्रखंड का बहुआरा गांव. भवानी दयाल के बारे में जानना सिर्फ एक व्यक्ति को जानना नहीं, बल्कि एक परिवार में तीन, तीन अनूठे नायकों को जानना है. भवानी दयाल के पिता जयराम सिंह, दक्षिण अफ्रीका में प्रवासी भारतीयों व गिरमिटिया मजदूरों के बीच बहुत लोकप्रिय व्यक्ति थे. गांधी के अनन्य और विश्वसनीय सहयोगी. भवानी दयाल की पत्नी जगरानी देवी, दक्षिण अफ्रीका में हिंदी की अनूठी सेविका, प्रचारिका, शिक्षिका और इन सबसे बढ़कर दक्षिण अफ्रीका में

गांधी के चलाये सत्याग्रह की एक महत्वपूर्ण वीरांगना. उन्होंने वहां जेल की सजा भी काटी. यातनाएं झेलीं. और भवानी दयाल ! उनका व्यक्तित्व बहुआयामी था. आजादी की लड़ाई के दिनों में सबसे लोकप्रिय प्रवासी थे. हिंदी के मशहूर लेखक रहे. आर्यसमाज के प्रमुख प्रचारक और विद्वान. दक्षिण अफ्रीका में यशस्वी पत्रकार और संपादक. दक्षिण अफ्रीका में गांधी द्वारा प्रकाशित होनेवाले पत्र, 'इंडियन ओपिनियन' के हिंदी संपादक. दक्षिण अफ्रीका में हिंदी के प्रचार में अपने जीवन का बहुमूल्य समय, सारे धन-संसाधन लगा देनेवाले हिंदी प्रेमी.भारत की आजादी की लड़ाई में सक्रिय भूमिका निभानेवाले, भारतीय जेल में सजा काटने वाले अनूठे स्वतंत्रता सेनानी. पर, इन सबसे ऊपर गांधी के अनन्य अनुयायी और प्रिय पात्र थे. ये सूचनायें उनके जीवन का सार हैं. इनके बारे में थोड़ा विस्तार इस पुस्तिका में है.

भवानी दयाल के बारे में जाना, पत्रकारिता के दिनों में. इनके बारे में अखबार में रिपोर्ट छपी. फिर इनकी किताबों का इंतजाम किया. इनकी आत्मकथा पढ़ी. इनकी आत्मकथा की प्रस्तावना लिखी है, डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने. हिंदी साहित्य के अद्वितीय संपादक, शिवपूजन सहाय से इनका निकटवर्ती संपर्क रहा. इस तरह इनकी किताबों को पढ़कर इनके बारे में जानने का मौका मिला. लगा, ऐसे विरले व्यक्ति के बारे में जानकारी इतनी देर से मिली! भारतीय इतिहास के पन्नों में ऐसे असाधारण व्यक्तित्व की चर्चा भी नहीं ! स्वतंत्रता संग्राम के नायकों में इनका प्रसंग नहीं ! हिंदी के साहित्य